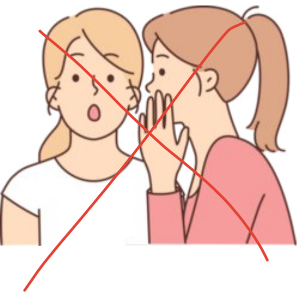

मीठे बच्चे - तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युबुल है, इसलिए फालतू बातों में अपना टाइम वेस्ट मत करो"

प्रश्नः- मनुष्य से देवता बनने के लिए बाप की कौन -सी श्रीमत मिली हुई है?

उत्तर:- बच्चे, तुम जबकि मनुष्य से देवता बनते हो तो कोई आसुरी स्वभाव नहीं होना चाहिए, 2. कोई पर क्रोध नहीं करना है, 3. किसको भी दु:ख नहीं देना है, 4. कोई भी फालतू बातें कान से नहीं सुननी हैं। बाप की श्रीमत है हियर नो ईविल. . . .।

ओम् शान्ति। तुम बच्चों का बैठना सिम्पुल है। कहाँ भी बैठ सकते हो। चाहे जंगल में बैठो, पहाड़ी पर बैठो, घर में बैठो या कुटिया में बैठो, कहाँ भी बैठ सकते हो। ऐसे बैठने से तुम बच्चे ट्रांसफर होते हो। तुम बच्चे जानते हो अभी हम मनुष्य, भविष्य के लिए देवता बन रहे हैं। हम कांटों से फूल बन रहे हैं। बाबा बागवान भी है, माली भी है। हम बाप

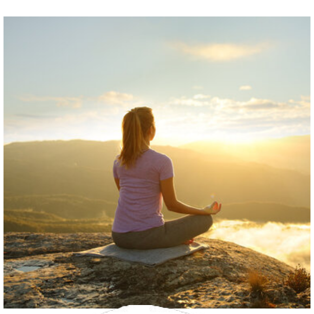

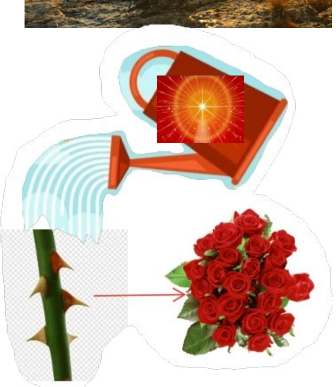

को याद करने से और 84 का चक्र फिराने से ट्रांसफर हो रहे हैं। यहाँ बैठो, चाहे कहाँ भी बैठो तुम ट्रांसफर होते-होते मनुष्य से देवता बनते जाते हो। बुद्धि में एम ऑब्जेक्ट है, हम यह बन रहे हैं।

कुछ भी काम-काज करो, रोटी पकाओ, बुद्धि में सिर्फ बाप को याद करो। बच्चों को यह श्रीमत मिलती है - चलते-फिरते सब कुछ करते सिर्फ याद में रहो। बाप की याद से वर्सा भी याद आता है, 84 का चक्र भी याद आता है। इसमें और क्या तकलीफ है, कुछ भी नहीं। जबकि हम देवता बनते हैं, तो (1) कोई आसुरी स्वभाव भी नहीं होना चाहिए। (2) कोई पर क्रोध नहीं करना, (3) किसको दु:ख नहीं देना, (4) कोई भी फालतू बातें कान से सुननी नहीं हैं। (5) सिर्फ बाप को याद करो। बाकी संसार की झरमुई-झगमुई तो बहुत सुनी। आधाकल्प से यह सुनते-सुनते तुम नीचे गिरे हो। अब बाप कहते हैं यह झरमुई-झगमुई न करो। फलाना ऐसा है, इनमें यह है। कोई भी फालतू बातें नहीं करनी है। यह जैसेकि अपना टाइम वेस्ट करना है। तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युबुल है। पढ़ाई से ही अपना कल्याण है,

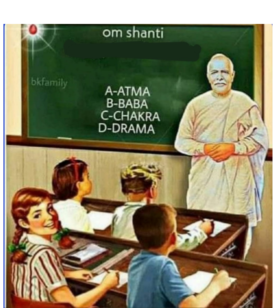

इनसे ही पद पायेंगे। उस पढ़ाई में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इम्तहान पास करने विलायत में जाते हैं। तुमको तो कोई तकलीफ नहीं देते। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझ बाप को याद करो, एक -दो को सामने बिठाते हैं, तो भी बाप की याद में रहो। याद में बैठते-बैठते तुम कांटों से फूल बनते हो। कितनी अच्छी युक्ति है, तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। हर एक की अलग-अलग बीमारी होती है। तो हर एक बीमारी के लिए सर्जन है। बड़े-बड़े आदमियों के खास सर्जन होते हैं ना। तुम्हारा सर्जन कौन बना है? भगवान। वह है अविनाशी सर्जन। कहते हैं हम तुमको आधाकल्प के लिए निरोगी बनाते हैं। सिर्फ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम 21 जन्म के लिए निरोगी बन जायेंगे। यह गांठ बांध देनी चाहिए। याद से ही तुम निरोगी बन जायेंगे। फिर 21 जन्म लिए कोई भी रोग नहीं होगा। भल आत्मा तो अविनाशी है, शरीर ही रोगी बनता है। लेकिन भोगती तो आत्मा है ना। वहाँ आधाकल्प तुम कभी भी रोगी नहीं बनेंगे। सिर्फ याद में तत्पर रहो। सर्विस तो बच्चों

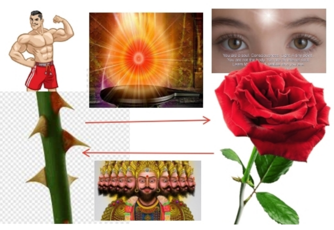

"**गाँठ** बाँधना",इस **मुहावरे का अर्थ** है, किसी बात को अच्छी तरह से याद रखना। इस **मुहावरे** का वाक्य में प्रयोग: १. मेरी कही हुई बात को अच्छी तरह **गाँठ** बाँध लो,वरना बाद में बहुत पछताओगे।

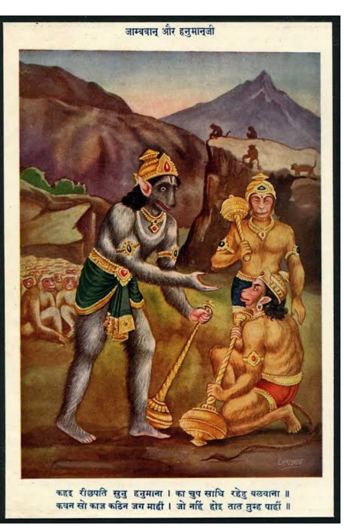

को करनी ही है। प्रदर्शनी में सर्विस करते-करते बच्चों के गले घुट जाते हैं। कई बच्चे फिर समझते हैं हम सर्विस करते-करते चले जायेंगे बाबा के पास। यह भी बहुत अच्छा है, सर्विस का तरीका। प्रदर्शनी में भी बच्चों को समझाना है। प्रदर्शनी में पहले-पहले यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र दिखाना चाहिए। यह ए वन चित्र है। भारत में आज से 5 हज़ार वर्ष पहले बरोबर इनका राज्य था। अथाह धन था। पवित्रता-सुख-शान्ति सब थी। परन्तु भक्ति मार्ग में सतयुग को लाखों वर्ष दे दिये हैं तो कोई भी बात याद कैसे आये, यह लक्ष्मी-नारायण का फर्स्टक्लास चित्र है। सतयुग में 1250 वर्ष इस डिनायस्टी ने राज्य किया था। आगे तुम भी नहीं जानते थे। अभी बाप ने तुम बच्चों को स्मृति दिलाई है कि तुमने सारे विश्व पर राज्य किया था, क्या तुम भूल गये हो। 84 जन्म भी तुमने लिये हैं। तुम ही सूर्यवंशी थे। पुनर्जन्म तो लेते ही हैं। 84 जन्म तुमने कैसे लिये हैं, यह बड़ी सिम्पल बात है समझने की। नीचे उतरते आये, अब फिर बाप चढ़ती कला में ले जाते हैं। गाते भी हैं चढ़ती कला

So, Be Prepared..

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

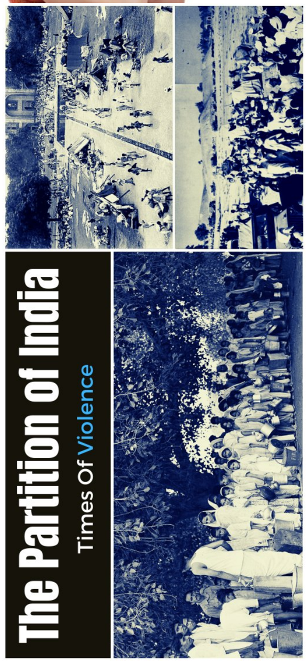

तेरे भाणे सबका भला। फिर शंख आदि बजाते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो हाहाकार होगा, पाकिस्तान में देखो क्या हो गया था - सबके मुख से यही निकलता था हे भगवान, हाय राम अब क्या होगा। अब यह विनाश तो बहुत बड़ा है, पीछे फिर जय जयकार होनी है। बाप बच्चों को समझाते हैं - इस बेहद की दुनिया का अब विनाश होना है। बेहद का बाप बेहद का ज्ञान तुमको सुनाते हैं। हद की बातें हिस्ट्री-जॉग्राफी तो सुनते आये हो। यह किसको भी पता नहीं था कि लक्ष्मी-नारायण ने राज्य कैसे किया। इन्हों की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई भी नहीं जानते। तुम अच्छी रीति जानते हो - इतने जन्म राज्य किया फिर यह धर्म होते हैं, इनको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल फादर बच्चों को बैठ देते हैं। वहाँ तो मनुष्य, मनुष्य को पढ़ाते हैं, यहाँ हम आत्माओं को परमात्मा आप समान बना रहे हैं। टीचर जरूर आपसमान बनायेंगे।

But, we Know it, How Lucky & Great we all are...!

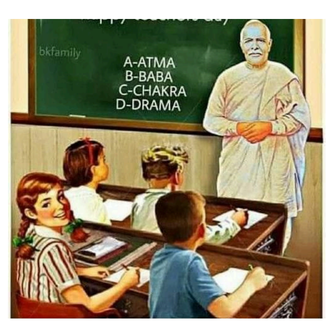

इस जहां में है और न होगा मुझसा कोइ भी खुशनसीब
तुने मुझको दिल दिया है मैं हूँ तेरे सबसे करीब

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

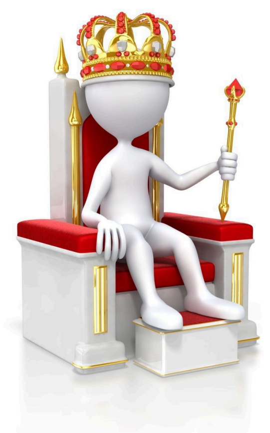

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप कहते हैं मैं तुमको अपने से भी ऊंच डबल सिरताज बनाता हूँ। लाइट का ताज मिलता है याद से, और 84 के चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती बनते हो, अभी तुम बच्चों को कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाई है। सतयुग में कर्म-अकर्म होता है। रावण राज्य में ही कर्म विकर्म होता है। सीढ़ी उतरते आते हैं, कला कम होते-होते उतरना ही है। कितना छी-छी बन जाते हैं। फिर बाप आकर भक्तों को फल देते हैं। दुनिया में भक्त तो सब हैं। सतयुग में भक्त कोई होता नहीं। भक्ति कल्ट यहाँ है। वहाँ तो ज्ञान की प्रालब्ध होती है। अभी तुम जानते हो हम बाप से बेहद की प्रालब्ध ले रहे हैं। कोई को भी पहले-पहले इस लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर समझाओ। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले इनका राज्य था, विश्व में सुख-शान्ति-पवित्रता सब थी, और कोई धर्म नहीं था। इस समय तो अनेक धर्म हैं, वह पहले धर्म है नहीं फिर इस धर्म को आना है जरूर। अब बाप कितना प्यार से पढ़ाते हैं। कोई लड़ाई की बात नहीं, बेगर लाइफ है, पराया राज्य है, अपना सब कुछ गुप्त है।

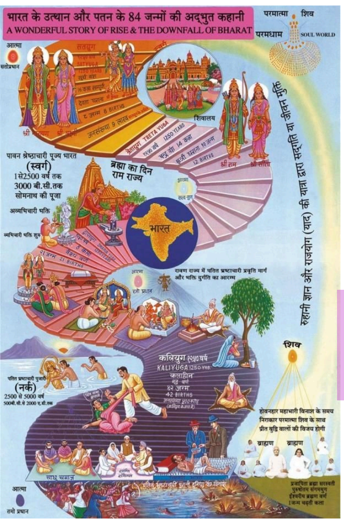

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा... With too much love...

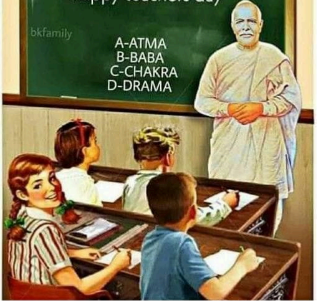

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाबा भी गुप्त आया हुआ है। आत्माओं को बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है। शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। वह अभी देह-अभिमान में आई है। अब बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। बाप और कोई ज़रा भी तकलीफ नहीं देते हैं। बाप जब गुप्त रूप में आते हैं तो तुम बच्चों को गुप्त दान में विश्व की बादशाही देते हैं। तुम्हारा सब गुप्त है इसलिए रसम के रूप में कन्या को जब दहेज देते हैं तो गुप्त ही देते हैं। वास्तव में गाया जाता है - गुप्त दान महापुण्य। दो-चार को मालूम पड़ा तो वह ताकत कम हो जाती है।

Most imp.

बाप कहते हैं बच्चे तुम प्रदर्शनी में पहले-पहले इस लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर सबको समझाओ। तुम चाहते हो ना - विश्व में शान्ति हो। परन्तु वह कब थी, यह किसकी बुद्धि में नहीं है। अभी तुम जानते हो - सतयुग में पवित्रता, सुख, शान्ति सब थी, याद भी करते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, समझते कुछ नहीं। जिसको जो आया कह देते, अर्थ कुछ नहीं।

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

यह है ड्रामा। मीठे-मीठे बच्चों को बुद्धि में ज्ञान है कि हम 84 का चक्र लगाते हैं। अभी बाप आये हैं - पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाने। बाप की याद में रहते ट्रांसफर होते जाते हैं। कांटे से फूल बनते हैं। फिर हम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बनाने वाला बाप है। वह परम आत्मा तो सदैव प्योर है। वही आते हैं प्योर बनाने। सतयुग में तुम खूबसूरत बन जायेंगे। वहाँ नैचुरल ब्युटी रहती है। आजकल तो आर्टीफिशयल श्रृंगार करते हैं ना। क्या-क्या फैशन निकला है। कैसी-कैसी ड्रेस पहनते हैं। आगे फीमेल्स बहुत पर्दे में रहती थी, कि कोई की नज़र न पड़े। अभी तो और ही खुला कर दिया है, तो जहाँ तहाँ गंद बढ़ गया है। बाप कहते हैं - हियर नो ईविल।

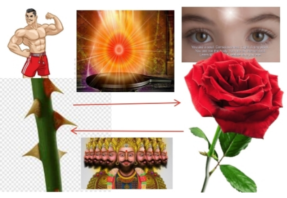

राजा में पावर रहती है। ईश्वर अर्थ दान करते हैं तो उसमें पावर रहती है। यहाँ तो कोई में पावर है नहीं, जिसको जो आया करते रहते हैं। बहुत गन्दे मनुष्य हैं। तुम बहुत सौभाग्यशाली हो जो खिवैया ने हाथ पकड़ा है। तुम ही कल्प-कल्प निमित्त बनते हो।

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम जानते हो पहले मुख्य है देह-अभिमान, उसके बाद ही सब भूत आते हैं। मेहनत करनी है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह कोई कड़ुवी दवाई नहीं है। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। फिर कितना भी पैदल बाबा की याद में करते जाओ, कभी टांगे थकेंगी नहीं। हल्के हो जायेंगे। बहुत मदद मिलती है। तुम मास्टर सर्वशक्तिमान बन जाते हो। तुम जानते हो हम विश्व का मालिक बनते हैं, बाप के पास आये हैं और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ बच्चों को कहते हैं हियर नो ईविल। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं उनके मुख से तो सदैव ज्ञान रत्न ही निकलेंगे। ज्ञान की बातों के सिवाए और कोई बात मुख से नहीं निकल सकती। तुम्हें वाह्यात झरमुई-झगमुई की बातें कभी नहीं सुननी है। सर्विस करने वालों के मुख से सदैव रत्न ही निकलते हैं। ज्ञान की बातों के सिवाए बाकी है पत्थर मारना। पत्थर नहीं मारते तो जरूर ज्ञान रत्न देते हैं या पत्थर मारेंगे या अविनाशी ज्ञान रत्न देंगे, जिसकी वैल्यु कथन नहीं कर सकते। बाप

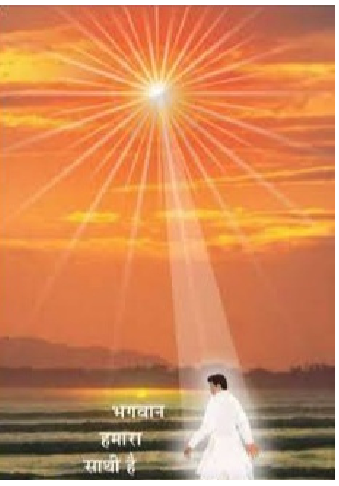

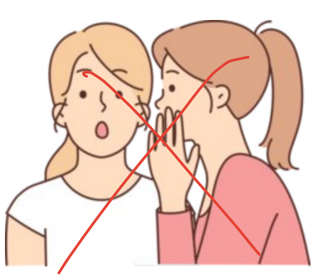

Definition of..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आकर अभी तुमको ज्ञान रत्न देते हैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

आपको खा जाऊ मीठे बाबा...

बच्चे जानते हैं बाबा बहुत-बहुत मीठा है, आधाकल्प गाते आते हैं, तुम मात-पिता.... परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते थे। तोते मिसल सिर्फ गाते रहते थे। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा हमको बेहद का वर्सा विश्व की बादशाही देते हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले हम विश्व के मालिक थे। अभी नहीं हैं, फिर बनेंगे। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा वर्सा देते हैं। ब्राह्मण कुल चाहिए ना। भागीरथ कहने से भी समझ न सकें इसलिए ब्रह्मा और उनका फिर ब्राह्मण कुल है। ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं इसलिए उनको भागीरथ कहा जाता है। ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण हैं चोटी। विराट रूप भी ऐसा होता है, ऊपर में बाबा फिर संगमयुगी ब्राह्मण जो कि ईश्वरीय सन्तान बनते हैं। तुम जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं फिर दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जायेगी। यह लक्ष्मी-नारायण भी डिग्री कम है, क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में है। परन्तु लक्ष्मी-

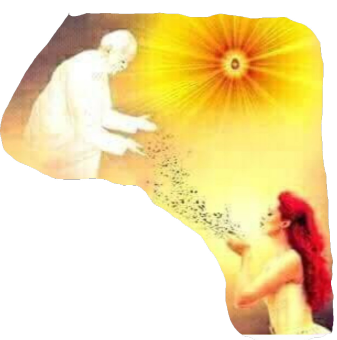

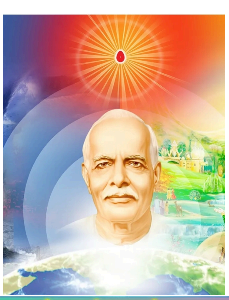

Most imp.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

27-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Mind it...

नारायण को अज्ञानी नहीं कहेंगे। इन्होंने ज्ञान से यह पद पाया है। तुम ब्राह्मण कितने ऊंच हो फिर देवता बनते हो तो कुछ भी ज्ञान नहीं रहता, उनमें ज्ञान होता तो दैवी वंश में परम्परा से चला आता।

Simple Logic...

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को सब राज़, सब युक्तियां बतलाते हैं। ट्रेन में बैठे भी तुम सर्विस कर सकते हो। एक चित्र पर ही आपस में बैठ बात करेंगे तो ढेर आकर इकट्ठे होंगे। जो इस कुल का होगा वह अच्छी रीति धारणा कर प्रजा बन जायेगा। चित्र तो बहुत अच्छे-अच्छे हैं सर्विस के लिए। हम भारतवासी पहले देवी-देवता थे, अभी तो कुछ नहीं हैं। फिर हिस्ट्री रिपीट होती है। बीच में यह है संगमयुग, जिसमें तुम पुरुषोत्तम बनते हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ज्ञान की बातों के सिवाए और कोई बात मुख से नहीं निकालनी है। झरमुई-झगमुई की बातें कभी नहीं सुननी है। मुख से सदैव रत्न निकलते रहें, पत्थर नहीं।

2) सर्विस के साथ-साथ याद की यात्रा में रह स्वयं को निरोगी बनाना है। अविनाशी सर्जन स्वयं भगवान हमें मिला है 21 जन्म के लिए निरोगी बनाने... इसी नशे में वा खुशी में रहना है।

वरदान:-हर कर्म में फालो फादर कर स्नेह का रेसपान्ड देने वाले तीव्र-पुरुषार्थी भव

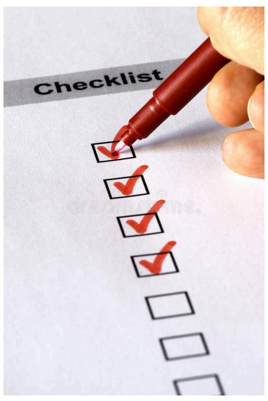

जिससे स्नेह होता है उसको आटोमेटिकली फालो करना होता है।

सदा याद रहे कि यह कर्म जो कर रहे हैं यह फालो फादर है? अगर नहीं है तो स्टॉप कर दो।

बाप को कॉपी करते बाप समान बनो। कॉपी करने के लिए जैसे कार्बन पेपर डालते हैं वैसे अटेन्शन का पेपर डालो तो कॉपी हो जायेगा क्योंकि अभी ही तीव्र पुरुषार्थी बन स्वयं को हर शक्ति से सम्पन्न बनाने का समय है। समजा?

अगर स्वयं, स्वयं को सम्पन्न नहीं कर सकते हो तो सहयोग लो। नहीं तो आगे चल टू लेट हो जायेंगे।

अब तो जागो....

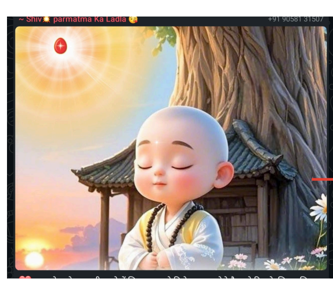

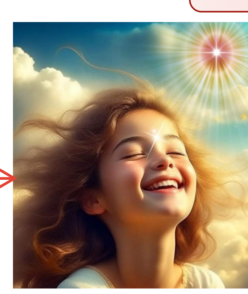

स्लोगन:-सन्तुष्टता का फल प्रसन्नता है, प्रसन्नचित बनने से प्रश्न समाप्त हो जाते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे-आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, अन्तर्मुखी बनो

Note it Down & Revise to Reinforce in mind...

किसी कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखो। यह स्मृति में रहे कि वैराइटी आत्मायें हैं।

सबके प्रति आत्मिक दृष्टि रहे। आत्मा के रूप में (m. Imp.) उनको स्मृति में लाने से पावर दे सकेंगे। समजा?

आत्मा बोल रही है, आत्मा के यह संस्कार हैं, यह पाठ पक्का करो तो सबके प्रति स्वत: शुभ भावना रहेगी।

This Avyakt Ishara is very deep & very useful in day to day life

"फाइनल पेपर" book से प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा के महावाक्य जो यहां रखते हैं, वो नये महावाक्य हर चौथे दिन पर रखते है, जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर तक उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि बुद्धि से मिट से जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

आप भी महसूस करेंगे कि आज के वही महावाक्य , दूसरे - तीसरे दिन के revision पर उसका अति गूढ़ अर्थ (यथा शक्ति पुरुषार्थ प्रमाण) आपके सामने प्रगट होगा।। इसी को मीठे प्यारे बापदादा ज्ञान का मनन-मंथन व ज्ञान की गहराई में जाना कहते है।

फाइनल पेपर

जिस प्रकार बिना मथे दूध में छिपा माखन नहीं मिल सकता
उसी प्रकार हमें इन महा वाक्यों को revise करके उसकी गहराई तक
जाना पड़ेगा तभी माखन व सच्चे रत्न प्राप्त होंगे।

36

यह भी चेक करना है कि बहुत समय से ओर एक-रस अर्थात् लगातार क्या चारों ही सम्बन्ध निभाते रहे हैं या बीच-बीच में कट हुआ है? अगर बीच में कुछ मार्जिन रह गयी है तो बार-बार कटी हुई चीज़ कमजोर होती है। इसलिये अपने जीवन को इन चारों ही बातों के आधार पर रिवाईज कर के देखो। इस चैकिंग को करके अपने-आप को परख सकेंगे कि मेरी प्राप्ति व प्रारब्ध क्या हैं?

52

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं। एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार', शिक्षक के सम्बन्ध में-'ईमानदार' और गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

फाइनल पेपर

सूर्यवंशी है या चन्द्रवंशी हैं? सूर्यवंशी में राजाई फैमिली में हैं या स्वयं महाराजा महारानी बनने वाले हैं? अभी जबकि समय नजदीक है फाइनल पेपर का तो जैसे लौकिक पढ़ाई में भी सभी सब्जेक्टस को रिवाइज किया जाता है ओर एक-एक सबजेक्टस को रिवाइज कर अपनी कमी को सम्पन्न करते हैं, इसी प्रकार सभी को अपने पुरुषार्थ को इसी रीति रिवाइज करना है। कैसे स्वयं का जस्टिस बनो अभी वह तरीका सुना रहे हैं। जब स्वयं को जज़ करना आ जायेगा तो फिर दूसरों को भी सहज ही परख सकेंगे। जब स्वयं प्राप्ति-सम्पन्न होगें तो दूसरों को भी प्राप्ति करा सकेंगे। यह चेक करना तो सहज है ना? एक सब्जेक्ट अथवा एक सम्बन्ध व एक धारणा व एक सलोगन में भी कमी नहीं होनी चाहिए।

26/6/25

(21.07.1973)